न हार मानने और न थकने वाले का नाम है
शाहरुख खान

भारतीय सिनेमा के आधुनिक इतिहास में शाहरुख खान एक ऐसे अभिनेता हैं, जिन्होंने अपने अभिनय के शौक को करियर बनाने के लिए इतनी मेहनत की है कि उनकी सच्ची मेहनत और लगन को न केवल उनको भारतीय फिल्म इंडस्ट्री का किंग खान बनाया, बल्कि आज वह दुनिया के अरबपतियों की जमात में शामिल होकर उन करोड़ों युवाओं के लिए आदर्श बने हुए हैं, जो यह सपना देखते हैं कि बड़ा कैसे बना जाए किंग कैसे बना जाए।

अरविंद रावल
झबुआ, मध्य प्रदेश

शाहरुख का एक वक्त ऐसा था जब खाने को पैसे नहीं, रहने को घर नहीं था, लेकिन धुन के पक्के दिल्ली के इस लड़के ने अपने अभिनय के लक्ष्य को ही सर्वोपरी मानकर जमीन पर, जो संघर्ष किया है वह पूरी दुनिया ने देखा। यह शाहरुख की मेहनत और उसकी जीवटता का परिणाम था कि वह कभी भी किसी भी परिस्तिथि में अपने लक्ष्य को नहीं भूला और अपनी मेहनत के बूते केस्मत को इस कदर संवारा की सफलता शाहरुख के कदमों से कभी दूर हटी नहीं और देखते ही देखते शाहरुख खान ने आज जो मुकाम हासिल किया है, ह मुकाम हासिल करने के लिए अच्छे-अच्छे सफल सितारे भी एसते हैं। शाहरुख खान आज सिफर से शिखर तक पहुंच गए हैं तो निश्चित ही उनकी इस सफलता में पत्नी गौरी खान के अलावा कई ऐसे लोगों का भी सहयोग है, जिन्होंने शाहरुख के कठिन दौर में हिम्मत बनकर साथ निभाया था। यह शाहरुख का बड़प्पन है कि वह शिखर पर पहुंचकर भी सफर में साथ निभाने वालों को भूले नहीं हैं, बल्कि आज भी शाहरुख का फ्री वक्त सफर के साथियों में ही बीतता है। भारतीय जनमानस शाहरुख खान का इसलिए भी आदर करता है कि अपार सफलता पाने के बाद, उन्होंने अन्य सितारों की तरह अपना परिवार कभी बदलने का विचार नहीं किया है। किंग खान शाहरुख के अरबपति बनने का सफर वाकई नई पीढ़ी के युवाओं के लिए आदर्श है।

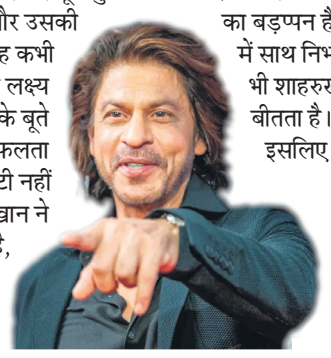

बरेली के जतिन फिल्म की शूटिंग के लिए जाएंगे पेरिस

बरेली शहर के कई युवा अभिनय की दुनिया में अपने नाम के साथ-साथ शहर का नाम भी रोशन कर रहें है। प्रियंका चौपड़ा, दिशा पाटनी के बाद शहर का एक और अभिनेता टीवी दुनिया में मजूबत जगह बना चुका है, जिस सितारे की हम बात कर रहे है, वह हैं जतिन सूरी। बरेली में ही पैदा हुए और बरेली से अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अभिनेता के रूप में अपनी जगह बनाने वाले जतिन बेहद सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। जतिन बताते हैं कि उन्होंने अभिनय के बारे कभी सोचा ही नहीं था, उन्हें खेल में ज्यादा रूचि थी, जिसके बाद वह अपने पिता के व्यापार में साथ देने लगे। 2015 में व्यापार की वजह से दिल्ली गए थे, वहां पर उन्होंने ऑडिशन देते हुए लोगों को देखा तो उन्होंने सोचा क्यों न अभिनय में लक आजमाया जाए। यहीं से उनके जीवन में मोड़ आया और उन्होंने अभिनेता बनने के लिए ऑडिशन देना शुरू कर दिया। शुरुआत में जतिन के पापा ने उन्हें रोका, लेकिन उनकी मां और चाची ने उन्हें ऑडिशन के लिए बाहर भेज दिया, जिसके बाद उनके पिता ने भी साथ देना शुरू कर दिया। जतिन को 'बजना चाहिए गाना' से पहला काम 2016 में मिला, जिसके बाद वे अभिनय की दुनिया में आगे बढ़ते गए। जतिन ने छोटे पर्दे पर निमकी मुखिया सीरियल में डायमंड सिंह का अभिनय किया। निमकी मुखिया में काम करने के बाद, उन्हें फेम मिलनी शुरू हो गई। जतिन सोनाक्षी सिन्हा के साथ अकीरा मूवी में भी काम कर चुके हैं। जतिन ने बताया की अनुपमा हर घर में देखने वाला सीरियल है। वह बताते हैं कि कोरोना काल में वह घर पर ही थे, उनकी मां अनुपमा टीवी पर देखती रहती थीं और उनसे बोलतीं कि वह भी इसमें काम कर लें, तब उन्होनें यह कह दिया, जो होगा देखा जाएगा। उसके बाद जनवरी 2025 में अनुपमा में काम करने की बात होती है। अगले ही दिन वे मुंबई चले गए और सीरियल में काम करना शुरू कर दिया। अनुपमा हर घर में देखा जाने वाला सीरियल होने के कारण वह और लोकप्रिय हो गए। जतिन ने बताया कि वह एक फिल्म के प्रोजक्ट पर काम कर रहे हैं। वह जल्द ही मुंबई में आठ दिन की शूटिंग खत्म करके, फिल्म की शूटिंग के लिए पेरिस रवाना होंगे। इसी महीने पेरिस में फिल्म की शूटिंग के साथ दो गानों की शूटिंग भी पेरिस में पूरी करेंगें। सूरी बरेली के युवाओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि "आपका कोई भी लक्ष्य है चाहे अभिनय की दुनिया का या कोई भी तो, उस पर दृढ़ निश्चय होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़े सफलता जरूर मिलेगी।"

प्रस्तुति-अभिषेक मिश्रा

किस दुनिया की मोनिका!

मोनिका बेलुची इटैलियन अभिनेत्री हैं। भारत से भी उनका नाता है। रजनीकांत की हाल में रिलीज फिल्म 'कूली' में एक गाना है मोनिका बेलुची... यह गाना दरअसल इसी इटैलियन अभिनेत्री से जुड़ा हुआ है। यूट्यूब पर तमिल गाने की व्यूवरशिप 30 मिलियन पहुंच गई है। मोनिका ने यह गाना देखकर पूजा हेगड़े की तारीफ भी की है। फिल्म में यह गाना पूजा पर ही पिक्चराइज किया गया है। मोनिका बेलुची को कभी सोनिया गांधी की बायोपिक के लिए भी कांटेक्ट किया गया था। बताते हैं कि उन्होंने फिल्म को यह कहते हुए रिजेक्ट कर दिया था कि स्क्रिप्ट अच्छी मिलेगी तो वह जरूर इस फिल्म में काम करेंगी। बहरहाल मोनिका वर्ल्ड सिनेमा में छाई हुई हैं। अपनी मनमोहक अदाओं, बहुमुखी प्रतिभा और शाश्वत आकर्षण के लिए जानी जाने वाली मोनिका ने मॉडलिंग की दुनिया से लेकर सिनेमा जगत तक अमिट छाप छोड़ी है। उनकी यात्रा एक छोटे इतालवी गांव से शुरू होकर वैश्विक मंच तक पहुंची, जहां उन्होंने खुद को दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित अभिनेत्रियों में से एक के रूप में स्थापित किया। *-फीचर डेस्क*

मोनिका अन्ना मारिया बलूची का जन्म 30 सितंबर 1964 को इटली के छोटे से गांव सिट्टा डी कास्टेलो में हुआ था। उन्होंने एक वकील बनने का सपना देखा था और पेरुगिया विश्वविद्यालय में कानून की पढ़ाई शुरू की, लेकिन अपनी पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए, उन्होंने मॉडलिंग करना शुरू कर दिया, जिसने उनके जीवन को एक नया मोड़ दिया। 1988 में वह मॉडलिंग करियर में आगे बढ़ने के लिए यूरोप के फैशन सेंटर मिलान चली गईं और एलीट मॉडल मैनेजमेंट से जुड़ गईं। अपनी आकर्षक सुंदरता के कारण, उन्होंने जल्द ही डोल्से एंड गब्बाना और डायर जैसे बड़े ब्रांडों के लिए मॉडलिंग की।

मॉडलिंग में शानदार सफलता के बाद, मोनिका ने 1990 के दशक की शुरुआत में अभिनय की दुनिया में कदम रखा। उन्होंने पहले इतालवी टीवी और फिल्मों में छोटी भूमिकाएं निभाईं। उनकी हॉलीवुड में पहली पहचान तब बनी जब उन्होंने फ्रांसिस फोर्ड कोपोला की फिल्म ब्रैम स्टोकर्स ड्रैकुला (1992) में एक मोहक वैम्पायर दुल्हन की भूमिका निभाई। उनकी अभिनय क्षमता को 2000 की फिल्म मालेना से वैश्विक पहचान मिली। इस फिल्म में उन्होंने एक खूबसूरत विधवा की संवेदनशील भूमिका निभाई, जिसके लिए उन्हें काफी सराहना मिली। यह फिल्म उनकी करियर की सबसे महत्वपूर्ण फिल्मों में से एक मानी जाती है, जिसने यह साबित कर दिया कि उनकी प्रतिभा सिर्फ उनकी सुंदरता तक ही सीमित नहीं है। उनकी अन्य उल्लेखनीय यूरोपीय फिल्मों में द अपार्टमेंट (1996) और विवादित, लेकिन कलात्मक रूप से प्रशंसित इर्रिवर्सिबल (2002) शामिल हैं। मोनिका ने हॉलीवुड में भी कई यादगार भूमिकाएं निभाई हैं। द मैट्रिक्स रीलोडेड (2003) और द मैट्रिक्स रिवोल्यूशन्स (2003): इन साइंस-फिक्शन फिल्मों में उन्होंने पर्सेफोन का किरदार निभाया, जिसने उन्हें एक बड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्टार बना दिया। स्पेक्ट्र (2015): जेम्स बॉन्ड श्रृंखला की इस फिल्म में, वह सबसे उम्रदराज 'बॉन्ड गर्ल' बनीं। यह उनकी स्थायी सुंदरता और अभिनय क्षमता का प्रमाण था।

जिंदगी का सफर

आशा पारेख: 70 के दशक की चुलबुली सी अभिनेयी

बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री, निर्देशक और निर्माता आशा पारेख का जन्म 2 अक्टूबर 1942 को मुंबई में एक गुजराती परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम प्राणलाल पारेख और मां का नाम सुधा पारेख था। अपनी मां के प्रोत्साहन से, उन्होंने कम उम्र में ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य की शिक्षा लेना शुरू कर दिया था और उन्होंने भरतनाट्यम में महारत हासिल की। 1952 में मशहूर निर्देशक बिमल रॉय ने उन्हें एक स्टेज शो में नाचते हुए देखा और उन्हें अपनी फिल्म 'मां' में बाल कलाकार के रूप में काम दिया। इसके बाद, उन्होंने फिल्म 'बाप बेटी' (1954) में भी अभिनय किया।

16 साल की उम्र में, उन्होंने फिल्म 'दिल देके देखो' (1959) में शम्मी कपूर के साथ मुख्य अभिनेत्री के रूप में अपनी शुरुआत की। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई और उनके करियर को एक नई दिशा दी। 1960 और 1970 के दशक में उन्होंने कई सफल फिल्में दीं, जिसके कारण उन्हें 'द हिट गर्ल' के नाम से जाना जाने लगा। उनकी प्रमुख फिल्में हैं, 'दिल देके देखो' (1959), 'तीसरी मंजिल' (1966), 'कटी पतंग' (1970), 'कारवां' (1971), 'मेरा गांव मेरा देश' (1971) और 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' (1978)। फिल्म 'कटी पतंग' (1970) में अपनी भूमिका के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

आशा पारेख ने कभी शादी नहीं की। उन्होंने एक बार खुलासा किया था कि वह निर्देशक नासिर हुसैन से प्यार करती थीं, लेकिन चूंकि वह पहले से शादीशुदा थे, इसलिए वह किसी का घर नहीं तोड़ना चाहती थीं। अभिनय के अलावा, आशा पारेख ने टेलीविजन में भी काम किया। उन्होंने अपना प्रोडक्शन हाउस 'आकृति' शुरू किया, जिसके तहत उन्होंने टीवी धारावाहिकों का निर्माण किया। उन्होंने एक गुजराती टीवी सीरियल 'ज्योति' का निर्देशन भी किया था। उन्हें भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए 1992 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 2020 में सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार (2002) उन्हें उनके उत्कृष्ट करियर के लिए दिया गया। वह समाजसेवी भी हैं और उन्होंने मुंबई में एक धर्मार्थ अस्पताल की स्थापना की है, जिसका नाम 'द आशा पारेख अस्पताल' है।